Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences

Volume 2, 2022, pp. 90–96

SOCIAL CRITICISM IN THE PLAY 'KAMANA'

Dr Abdul Rajak

Assistant Professor, Department of Hindi,

Kristu Jayanti College (Autonomous), Bengaluru

abdulrajak@kristujayanti.com

'कामना' नाटक की समाजशास्त्रीय समीक्षा

जयशंकर प्रसाद ने सन् 1927 में 'कामना' नाटक को लिखा था। इस कामना नाटक को 3 अंकों और 22 दृश्यों में एक द्वीप की कथा के माध्यम से भारत की मातृभूमि को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया है। नाटक में मानसिक भावनाओं को पात्र के रूप में प्रयोग किया गया है, जैसे-कामना, संतोष, विनोद, विलास, विवेक, शांतिदेव, दम्भ, दुर्वृत्त, क्रूर, लीला, लालसा, करुणा, प्रमदा, वनलक्ष्मी और महत्त्वाकांक्षा आदि को दर्शाया है। प्रबल होकर व्यक्ति और राष्ट्र की संस्कृति और शांति को नष्ट करते हैं, यहाँ इस नाटक में संकेतित है। विदेशी युवक विलास के प्रभाव में आकर द्वीपवासी नशाखोरी,व्यभिचारी और सोने के लालच आकर भटक जाते हैं, इसका परिणाम यह होता है कि पूरे बुराई कर्मों में शामिल हो जाते हैं। द्वीपवासी भारत की मूल संस्कृति और पाश्चात्य के रीति-रिवाजों से आकर्षित होकर पूरी तरह से विदेशी संस्कृति को अपनाने मजबूर होते है। आगे कालांतर में वास्तविकता को जानकर अपनी संस्कृति के महत्व और विदेशी कुटनीति का पता चलने के उपरांत फिर से द्वीप में पूरानी जीवन शैली को स्वीकार कर लेते हैं।

नाटककार जयशंकर प्रसाद के द्वारा लिखा गया नाटक 'कामना' है। इस नाटक का शुरुआत द्वीप में कामना और उनके सखियाँ के वार्तालाप से शुरू होता है। इस द्वीप में रहने वाले लोगों को तारा के संतान कहते हैं, वे लोग स्वभाव में ईमानदार, सच्चाई एवं शिष्टाचार के पूजारी हैं। द्वीप के उद्भव के बारे में बताते हुए नाटक की नायिका कामना कहती है कि- "आकाश की और दिखाकर हम लोग बडी दूर से आये हैं। जब विलोडित जलराशि स्थिर होने पर यह द्वीप ऊपर आया, उसी समय हम लोग शीतल तारिकाओं की किरणों की डोरी के सहारे नीचे उतारे गये। इस द्वीप में अब तक तारा की ही संतान बसती हैं।"[1] यहाँ पृथ्वी(ब्रह्मांड) की उत्पत्ति एवं विकास के बारे में दर्शाया गया है।

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
Volume 2, 2022, pp. 90–96

दरअसल आध्यात्मिकता लेकर आजकल दुनिया में अधिकतर लोगों की मानसिकता अलग-अलग रूप में नजर आता है, यदि विशेषकर युवावर्ग को आध्यात्मिकता के नाम से एक तरह की बेचैनी छा गई है। इसका कारण यह है कि आध्यात्मिकता को वास्तव में बेहद भद्दे तरीके से पेश किया जा रहा है। आजकल लोग आध्यात्मिकता का मतलब निकालते हैं कि स्वयं को यातना देना और अभाव ग्रस्त जीवन बिताना। इसको लोग भूखे रहने और सड़क के किनारे बैठ कर भीख माँगने से जोड़ने लगे हैं, अगर आप सृष्टि के सभी प्राणियों में भी उसी परम-सत्ता के अंश को देखते हैं। आध्यात्मिकता का मतलब भगवान की स्थुति से जुडी हुई है। जीवन क्षणिक है कब मिट जाता पता नहीं है। कामना विलास को समझाते हुए पिता (भगवान) की लीला के बारे में जानकारी देती है कि- "पिता की आज्ञा से, कभी छोटी, कभी बड़ी एक राह खुलती है और किसी दिन बिल्कुल नहीं, उसे चंद्रमा कहते हैं। अपने शीतल पथ पर से थकी हुई तारा की संतान अपने खेल समाप्त कर उसी से चली जाती है।"[2] इस द्वीप में रहने वाले एक परिवार के रूप में रिश्तो को निभाते हुए पूर्ण विश्वास के साथ जीवन यापन करते हैं। वे तारा के संतान प्रकृति से जुड़े हुए और अपने पिता से डरते हुए जीवन बिता रहे हैं।

द्वीपवासियों को पिता का संदेश पक्षी के माध्यम से भेज है और द्वीपवासियों संदेश को दिल लगाकर सुनते थे। "दूर एक बड़ा सुरीला पक्षी बोलता है। कामना घुटने टेक कर सिर झुका लेती है और चुपचाप उसका शब्द सुनती है। उठ कर पिता का संदेश सुन रही थी। मैं उपासना गृह में जाती हूँ। क्योंकि कोई नवीन घटना होने वाली है। तुम ठहरकर आना।"[3] वाकी पिता का संदेश सच्च हो जाता है। संदेश यह था कि एक विदेशी युवक इस द्वीप में आएगा, वह द्वीप के लोगों फुसलाकर व्यभिचार, मदिरा और सोने का लालच दिखाकर पूरे द्वीपवासियों को गुमराह कर देता है। अपने देश को सोना लेकर जाने की इरादे से आता है। लेकिन पिता के संदेश को भूलकर विदेशी युवक की आकर्षण में स्वागत करने लगते है। एक दिन नदी के उस पार से एक विदेशी युवक विलास का आगमन होता है। कामना उस द्वीप के लोगों का नेतृत्व करते हुए और विलास का स्वागत करती है। उसके बदले में विलास उसे स्वर्ण पट पहनता है।

कामना की स्वर्ण पट को देखकर पहली बार सहेली लीला को लालच होती है। लीला स्वर्ण पट के तरफ आकर्षित होकर मन ही मन वह हासिल करने की इच्छा रखती है। प्रसाद जी लिखते है कि-"इस द्वीप के निवासियों में ब्याह होता है, तब मैं आशीर्वाद देने आती हूँ। परंतु किसी के सामने नहीं। आज तक इस द्वीप के लोग यथ-लाभ संतुष्ट रहते थे, कोई किसी

का मत्सर नहीं करता था। परंतु इस विष का......"[4] प्रकृति से जुडे तारा के संतानों को वनलक्ष्मी द्वीपवासियों में सिर्फ शादीशुदा लोगों को आशीर्वाद आती है। वनलक्ष्मी लीला के मन स्वर्णपट की चाहत देखकर उसे अभिशाप देने के लिए आती है। वनलक्ष्मी द्वीप में आती है क्योंकि इस द्वीप में आज तक किसी ने जलन या ईर्ष्या नहीं किए करते है। लेकिन पहली बार कामना के स्वर्ण पट को देखकर लीला को लालच होने के कारण आयी है। उसे अभिशाप देने के लिए आती है।

कामना उस देश के लोगों पर नेतृत्व करती है और उस की बात द्वीप में रहने वाले सभी लोग स्वीकार कर लेते है। जैसे-जैसे कामना द्वीप वासियों को विलास से परिचित कराती है। द्वीप को लोग आपस में एक दूसरे से मिल जुलकर परिवार के सदस्यों के रूप में जीवन बिताते रहे। विलास वहाँ रहने वाला सोना एवं संपत्ति पर राज करने की इच्छा जागृति होती है। इसी इच्छा को पूर्ण करने के लिए वह सोंचता है कि कैसे भी उस द्वीप वासियों को शडयंत्र का जाल बिछाकर अपराध करने के लिए मजबूर करता है। विलास को वैसा अवसर भी उसे प्राप्त होता है, वह यह है कि विनोद एवं लीला के शादी के सुअवसर पर उपासना मंदिर के पास द्वीपवासियों को निमत्रंण देते ही सभी उपासना मंदिर के पास उपस्थित होने के लिए कहते है। विलास एक खेल के माध्यम से वहाँ द्वीपवासियों को पहली बार मदिरा एवं व्यभिचार से परिचित करता है। प्रसाद जी लिखते है कि–"आप लोग कुछ थके होंगे, इसलिए थोडी-थोडी पेया पी लीजिए तब खेल होगा। देखिए, आप लोगों को आज एक नया खेल खेलाया जायगा। जो मैं कहू, वही करते चलिये। अच्छा तो इनमें से सब लोग इसी प्रकार एक-एक स्त्री को चुन लो। नशे में एक दूसरे की स्त्री को अच्छी समझते हुए उनका हाथ पकडते है। विलास सबकों मंडलाकार खडा करता है।"[5] विलास द्वीपवासियों को समझाता है कि दुनिया में अय्याशी और विलास तो सही जीवन है इसके सिवा जिंदगी बेकार है। उसके उपरांत ही सभी द्वीपवासियों ने बुरे कार्यों में मशगूल होते है। आगे कालांतर में जैसे-जैसे दीपवासियों में मदिरा एवं व्यभिचार करने के लिए मजबूर होते हैं। की जि सोने से अमीर बनने का सपना दिखाता है। उसके बाद दीपवासियों में सोने का लालच पैदा होता है इस का परिणाम यह होता है कि लोग सोने के भाव में आकर एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। द्वीपवासियों में फैले बुरे असर को देखकर विवेक चिंतित होता है। प्रसाद जी लेखते हैं कि-"व्यभिचार ने तुम्हें स्त्री-सौंदर्य का कलुषित चित्र दिखालाया है और मदिरा उस पर रंग चढ़ाती है। क्यों, क्या यह सौंदर्य पहले कहीं छिपा था जो अब तुम लोग इतने लोलुप हो गये हो।"[6]

विलास कामना को द्वीप की रानी बनाता है और कामना की सहायता से एक नया राज्य की स्थापना, नया कानून और न्याय संविधान का निर्माण करता है। राजकीय आज्ञा की

समलोचना करना पाप है कहते हुए प्रसाद जी लिखते है कि-“देखो अब से तुम लोग एक राष्ट्र में परिणत हो रहे हो। राष्ट्र शरीर का आत्मा राजसत्ता है। उसका सदैव आज्ञा- पालन करना, सम्मान करना।”[7] उसमें सबसे पहले सेनापति के रूप में विनोद को चुनते हैं, विनोद अपनी सहेली लीला का पति है। विलास और कामना द्वीप वासियों में सोने और व्यभिचार का लालच फैलाकर सभी लोगों को अपने वश में कर लेते हैं। कामना रानी बनाने के बाद विसाल से शादी का प्रस्ताव रखती है लेकिन विलास उसे ठुकराता है। कामना को समझाता है कि रानी होकर विलास की जिंदगी जीने की ओर आकर्षित करता है। विलास सबसे पहले कामना को स्वर्ण का दौंकनी और मदिरा का भट्टी दिखाता है। विवेक कामना और विलास की बातों को नफरत करते हुआ संचाई की बात करता है लेकिन उसे पागल बूढा कह कर विरोध करते है। लीला, कामना और विनोद सभी ने विवेक को पागल मदिरा पीकर कही सोजा कह कर अपमान करते हैं। लीला, कामना विनोद और विलास यह नए कानून का निर्माण करते हैं। इसका उद्देश्य एक ही है द्वीपवासियों को अमीर बनाना।

प्रकृति से जुडे इस द्वीपवासियों में सोने का लालच में खून के प्यासे बन जाते है। नशा में व्यभिचार में हत्या एवं इज्जत लूटना आम होता जा रहा है। प्रसाद जी लिखते हैं कि**-** “हत्या और पापों की दौड़ हो रही है, और धर्म की धूम है। ”[8] शांतिदेव नामक व्यक्ति के पास ज्यादा सोना होता है, इसलिए दो सिपाही ने सोने के लालच में शांति देव की हत्या कर देते हैं। शांतिदेव के हत्यारों को नए कानून के माध्यम से उपासना मंदिर के पास द्वीपवासियों के सामने पेड़ को बाँधकर उन तीर चलाया जाता है। उन दोनों की मृत्यु हो जाता है। द्वीपवासी एक परिवार के रूप में जीवन यापन कर रहे थे लेकिन दिन-ब-दिन बढ़ते अपराध एवं पापों को देखकर बर्बाद होती जा रही द्वीप के लोगों को देखते हुए विवेक खेद प्रकट करता है। प्रसाद जी लिखते हैं कि- “वही वेदेशी, इंद्रजाली युवक विलास। उसकी तीक्ष्ण आँखों में कौशल की लहर उठती है। मुस्कराहट में शीतल ज्वाला और बातों में भ्रम की बहिया है।”[9]

शांतिदेव का संपत्ति उसके साथ रहते हुए लालसा हड़प कर लेती है और लालसा शांतिदेव की बहन करुणा को उस संपत्ति से दूर करती है। करुणा कहीं जंगल में अकेली कुटिया बनाकर जंगल के फलों पर आश्रित होती है। संतोष करूणा को बहन मानते हुए उसे मदद करता है। लालसा, शांतिदेव के मृत्यु के बाद मन की इच्छा अपूर्ण से बेचैन होती है। एक जीवन साथी के खोज में रहती है। लालसा शादी के लिए ढूंढने के सिलसिले में विलास के साथ लालसा परिचय और आगे शादी हो भी जाती है। लालसा को पता था कि शांतिदेव ने सोना नदी के उस पार से हासिल किया था। उस सोने को हासिल करने जगह लालसा जानती थी। सोना कहाँ है? इस की पूरी जानकारी लालसा ने शांति देव की जरिए से हासिल किया

था। लालसा, विलास, कामना, विनोद और लीला इन सभी को बताती है। सेनापति विनोद नशा में रहता तो उसके अनुपस्थिति में खुद विलास सेनापति बनकर कर फौज को लेकर सोने को हासिल करने जाता है और वहाँ बसने वाले लोगों पर हमला करते हैं। वहाँ के लोगों पर हमला करता हुए विजय भी हासिल करता है। उसी सिलसिले में हामले में एक स्त्री को पकड़कर सिपाही आते हैं, कामना पूछती है कि यह कौन है यह क्यों लायी गयी है, वे सिपाही कहते हैं कि हमें पता नहीं सेनापति आज्ञा है और सेनापति विलास से आप इसकी जानकारी हासिल कीजिए कह कर वहाँ से जाने की इजाजत माँगते हैं।

इसके बाद विलास विजय होकर वहाँ शौर्य से जय-जय कार करते आगमन होता है कामना पूछती है कि विलास स्त्री को तुमने क्यों यहाँ लाए हो विलास कहता है युद्ध में तो संपत्ति और स्त्री ही तो उपभोग की वस्तु है। इसीलिए लाया हूँ इस स्त्री को मेरे पट मंडप में लेकर जाने के लिए सिपाही से कहता है लेकिन कामना उसे मना करती है। प्रसाद जी लिखते है कि**-** "तुमको रानी, राज्य करने से काम, इन पचडों में क्यों पड़ती हो? युद्ध में स्त्री और स्वर्ण, यही तो लूट के उपहार मिलते हैं। वियजी के लिए यही प्रसन्नता है। इसे मेरे यहाँ भेज दो।"[10] विलास कहता है कि गद्दार है इसे कारागार में बंदी बनाने की आज्ञा देता है।

द्वीप में एक तरफ नवीन नगर का निर्माण होता है, उसमें आचार्य दंभ, क्रूर दुवृत्त और प्रमादा आदि लोगों ने पैसे के लालच में सभी लोगों को धोखा देकर ठगने में मशगूल होते हैं। एक दिन लालसा प्रमदा के स्वतंत्रता मंदरि से आती है वह भूल कर जंगल में चले जाती है। वहाँ एक शत्रुसेना का सिपाई मिलता है। वह पूछता है कि आप कौन है? लालसा कहती है कि मैं सेनापति विलास की पत्नी हूँ, सिपाई कहता है कि कल मेरे पत्नी को तुम्हारा पति ने बंदी बनाकर लेकर गया है। इसीलिए मैं तुम्हें बंदी बनाऊँगा कहता है तो लालसा उसे फुसलाकर वह अपना राज्य में लाती है और उसे बंदी बनाती है। नवीन नगर कालांतर में भूकंप में बिना नामों निशानों के जमीन के अंदर बर्बाद हो जाता है।

यहाँ हामले बंदी स्त्री और उसके पति को पेड़ को बाँधकर तीर से वार करने पर दो मर जाते हैं। एक लड़का भागते हुए आता है दो लाशों को देखकर रोता है कामना पूँछी है कि तुम कौन है? वह कहते हैकि वे मेरे पिता और माता। कामना उस लड़के को गोद में लेती है। वहाँ के खून को देखकर गुस्सा होती है। कामना विलास के ऊपर तेवर दिखाते हुए क्रोधित होती है। कामना कहती है कि रानी बरकर खून बहाना है तो मुझे रानी नहीं बनना है कह कर अपने स्वर्ण पट को उतार कर फेंक देती है। प्रसाद जी लेखते है कि-"यदि राजकीय शासन का अर्थ हत्या और अत्याचार है, तो मैं व्यर्थ रानी बनना नहीं चाहती। मेरे प्रजा इस बर्बरता से जितना शीघ्र छुट्टी पावे, उतना ही अच्छा। मुकुट उतारती हुई यह लो, इस पाप-चिह्न का बोझ

अब मैं नहीं वहन कर सकती। यथेष्ट हुआ। प्यारे देशवासियों, लौट चलो, इस इंद्रजाल की भयानकता सो भागों। मदिरा से सिंचे हुए चमकीले स्वर्ण-वृक्ष की छाया से भागो।"[11] आगे लीला और विनोद दोनों भी कामना का अनुकरण करते है। विलास और लालसा एक तरफ हो जाते हैं। इसके उपरांत विलास खुद अपने सिपाहियों से कामना के ऊपर अशिष्टता का व्यवहार करता है। विलास और लालसा पूरा सोना लेकर नाव में विदेश जाने की तैयारी करते हुए नाव आगे बढती है तो सभी द्वीपवासी नाव पर सोना फेंकते है। आगे जाकर समुद्र के बीच नाव का डगमगाती, विलास और लालसा का क्रंदन की आवाज आती है, आखिर सोने से नाव पानी में डूब जाती है। यहाँ द्वीप में कामना संतोष के साथ प्रेम में जुड जाते हैं। यही यवनिका पतन।

उपसंहार:

कामना नाटक के उपसंहार पर विचार करने से पहले हिंदी में एक मशहूर कहावत है 'लालच बुरी बला है।' कामना नाटक का उद्देश भी इसी के समान है लालच बुरी बला होती है। हमें जीवन में किसी भी समय लालच नहीं करना चाहिए। जो भी इंसान लालच करता है वह अपने जीवन में कभी खुश नहीं रह सकता। कामना नाटक पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र ने सही लिखा है कि-"परन्तु, यह संकेत भी अंततः एक संकेतक है दूसरे संकेत का और वह है अंग्रेजों द्वारा भारत द्वीप के विनाश और गुलाम बनाने की कथा का तथा प्रकारान्तर से किसी देश की गुलामी की कथा का। फलतः व्यापक अर्थ में यह पराधीनता-समीक्षा का नाटक है।"12जैसे भारत में अंग्रेजों का आक्रमण हुआ उसमें सबसे ज्यादा भारतवासी ही लालच में आकर अंग्रेजों को मदद किया इसका परिणाम यह हुआ कि पूरा देश इनका गुलाम बन गया। यहाँ कामना नाटक में विलास द्वीपवासियों खेल-खेल में को फंसाकर शड्यंत्र के माध्यम से सोना, मदिरा और व्यभिचार रूपी अपराधों में मशगूल कर सोने को हासिल करने चाल चलाता है। लेकिन इस का परिणाम लालसा और विलास की मृत्यु शैया बनती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. जयशंकर प्रसाद- कामना ,जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-16
2. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-17
3. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-17
4. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-20

Volume 2, 2022, pp. 90–96

5. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-33-34
6. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-42
7. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-55
8. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-48
9. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-48
10. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-79
11. जयशंकर प्रसाद- कामना, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष-2010, पृष्ठ सं-96
12. प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-2008 पृष्ठ-xxii.